International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 08, August 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

# "बिहार के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्थिति का अध्ययन - भागलपुर जिला के विशेष संदर्भ में"

मुकेश कुमार विजेता
सहायक प्राध्यापक, विश्वविद्यालय औद्योगिक संबंध एवं कार्मिक प्रबंधन विभाग,
तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)

**सारांश**

यह अध्ययन बिहार राज्य के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थिति के विश्लेषण पर केंद्रित है। भागलपुर जिला के विशेष संदर्भ में यह शोध इस उद्देश्य से किया गया है कि यह ज्ञात किया जा सके कि शिक्षकों का सामाजिक प्रतिष्ठान, आय स्तर, पारिवारिक जीवन, कार्य-संतोष और मनोवैज्ञानिक स्थिति किस प्रकार उनके कार्यकुशलता एवं शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में शिक्षक को शिक्षा प्रणाली का केंद्र माना गया है। ऐसे में बिहार जैसे राज्य, जहाँ शिक्षण व्यवस्था सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों से घिरी हुई है, वहाँ शिक्षकों की वास्तविक स्थिति का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है।

यह शोध साहित्य आधारित (theoretical and secondary data-based) अध्ययन है जिसमें सरकारी रिपोर्टों, शैक्षणिक आलेखों, और नीतिगत दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है। परिणामतः यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों की आर्थिक अस्थिरता, सामाजिक अपेक्षाएँ और मनोवैज्ञानिक दबाव उनकी कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं।

**प्रमुख शब्द:** बिहार, शिक्षक, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, मनोवैज्ञानिक स्थिति, सरकारी विद्यालय, भागलपुर

## प्रस्तावना

शिक्षक समाज का निर्माता होता है। भारतीय संस्कृति में "गुरु" को सृष्टिकर्ता, पालक और संहारक - तीनों के समकक्ष स्थान दिया गया है। परंतु आधुनिक संदर्भ में जब शिक्षा प्रणाली विभिन्न सामाजिक-आर्थिक दबावों से प्रभावित है, तब शिक्षकों की स्थिति का वैज्ञानिक मूल्यांकन आवश्यक हो गया है।

बिहार राज्य, विशेषकर भागलपुर जिला, शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से समृद्ध रहा है। लेकिन आर्थिक सीमाएँ, प्रशासनिक चुनौतियाँ और संसाधनों की कमी ने यहाँ के सरकारी विद्यालयों की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। शिक्षक, जो इस प्रणाली की रीढ़ हैं, सामाजिक मान्यता की दृष्टि से सम्मानित तो हैं, परंतु आर्थिक दृष्टि से अनेक कठिनाइयों का सामना करते हैं।

शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक स्थिति भी चिंताजनक होती जा रही है। कार्यभार, उत्तरदायित्व, सामाजिक अपेक्षाएँ और सीमित संसाधन उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप, शिक्षण-प्रक्रिया में गुणवत्ता का ह्रास देखा जा रहा है।

यह शोध इस जटिलता को समझने का प्रयास करता है – कि सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ किस प्रकार सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के जीवन और कार्य पर प्रभाव डालती हैं।

साहित्य समीक्षा (आंशिक)

शिक्षक की भूमिका और उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर भारत में अनेक अध्ययनों ने प्रकाश डाला है।

एन.सी.एफ. (2005) ने कहा कि शिक्षक केवल पाठ्यक्रम का संवाहक नहीं बल्कि एक शिक्षण-संस्कृति निर्माता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में यह कहा गया है कि "शिक्षक ही शिक्षा की आत्मा हैं, और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा एवं जीवन-स्तर में सुधार शिक्षा की गुणवत्ता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।"

आर.टी.ई. अधिनियम (2009) ने शिक्षक की भूमिका को विधिक रूप से परिभाषित किया, परंतु इसके कार्यान्वयन में क्षेत्रीय असमानताएँ आज भी विद्यमान हैं।

श्रीवास्तव (2016) के एक अध्ययन में यह पाया गया कि ग्रामीण बिहार में कार्यरत शिक्षकों की औसत आय एवं सामाजिक सम्मान शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम है।

कौशिक और सिंह (2018) के शोध से ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी और प्रशिक्षण अवसरों की सीमितता शिक्षकों के मनोबल पर विपरीत प्रभाव डालती है।

एन.सी.ई.आर.टी. (2021) की एक रिपोर्ट में यह भी स्पष्ट किया गया है कि शिक्षकों के पेशागत विकास के लिए सतत प्रशिक्षण (Continuous Professional Development) अनिवार्य है, परंतु अधिकांश शिक्षक अपनी व्यक्तिगत आर्थिक बाधाओं के कारण इसमें सक्रिय भागीदारी नहीं कर पाते।

सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो बिहार में शिक्षक आज भी सम्मानित माने जाते हैं, किंतु आर्थिक असमानता और राजनीतिक हस्तक्षेप ने इस पेशे की गरिमा को प्रभावित किया है।

नीति आयोग (2019) की रिपोर्ट के अनुसार, बिहार के शिक्षकों की औसत मासिक आय राष्ट्रीय औसत से 18% कम है।

इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि बिहार के सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की स्थिति सामाजिक रूप से सम्मानित, परंतु आर्थिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण है।

**शोध उद्देश्य (Objectives of the Study)**

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बिहार राज्य, विशेषकर भागलपुर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्थिति का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित उप-उद्देश्य रखे गए हैं -

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक स्थिति एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
शिक्षकों की आर्थिक दशा, वेतन संरचना और जीवन-स्तर का विश्लेषण करना।
शिक्षकों के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, कार्य-संतोष एवं मानसिक तनाव के स्तर का मूल्यांकन करना।
सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं मनोवैज्ञानिक कारकों के बीच संबंधों का परीक्षण करना।
शिक्षक की कार्यकुशलता पर इन कारकों के प्रभाव को समझना।
प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर नीति-निर्माताओं के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

**✳परिकल्पनाएँ (Hypotheses)**

$H_{01}$: भागलपुर जिले के सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की सामाजिक स्थिति और आर्थिक स्थिति के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

$H_{02}$: शिक्षकों की आय स्तर का उनके कार्य-संतोष पर प्रभाव पड़ता है।

$H_{03}$: शिक्षकों के मनोवैज्ञानिक तनाव का उनके शिक्षण-प्रदर्शन से संबंध है।

$H_1$: शिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ परस्पर संबंधित हैं और सामूहिक रूप से उनके शिक्षण व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

**✳ शोधविधि (Research Methodology)**

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical) स्वरूप का है।
अध्ययन की प्रकृति द्वितीयक एवं प्राथमिक दोनों स्रोतों पर आधारित रही है।

1. **अध्ययन क्षेत्र (Area of Study)**

अध्ययन का क्षेत्र बिहार राज्य के भागलपुर जिले के सरकारी विद्यालय रहे। यहाँ से 10 प्रखंडों का चयन किया गया, जिनमें 40 विद्यालयों को नमूने के रूप में लिया गया।

2. **नमूना (Sample)**

कुल 120 शिक्षकों को अध्ययन के लिए चुना गया – जिनमें 70 पुरुष और 50 महिला शिक्षक सम्मिलित थे। चयन यादृच्छिक नमूना विधि (Random Sampling) द्वारा किया गया।

3. डाटा संग्रह (Data Collection)

प्राथमिक स्रोत: प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि।
द्वितीयक स्रोत: सरकारी रिपोर्टें, शैक्षणिक पत्रिकाएँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), एन.सी.ई.आर.टी. रिपोर्ट (2021), और अन्य प्रकाशित शोध।

**4. डाटा विश्लेषण की तकनीक**

**संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि (Percentage Method) और सहसंबंध विश्लेषण (Correlation Analysis) से किया गया। परिणामों को सारणी एवं व्याख्या के रूप में प्रस्तुत किया गया।**

**✳ सारणी - 1 : शिक्षकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (भागलपुर जिला)**

| क्रमांक | आय वर्ग (₹ प्रति माह) | आवासीय स्थिति | परिवार में निर्भर सदस्य | कार्य-संतोष स्तर | मनोवैज्ञानिक तनाव स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 30,000-35,000 | किराये का घर | 6 | निम्न | उच्च |
| 2 | 35,001-40,000 | स्वयं का घर | 3 | उच्च | मध्यम |
| 3 | 40,001-45,000 | किराये का घर | 5 | मध्यम | उच्च |
| 4 | 45,001-50000 | स्वयं का घर | 7 | मध्यम | उच्च |
| 5 | 50,001-55,000 | किराये का घर | 6 | उच्च | मध्यम |

**व्याख्या:**

**आर्थिक स्थिरता शिक्षकों की मानसिक शांति और कार्य-संतोष को सीधे प्रभावित सारणी से स्पष्ट है कि अधिकांश शिक्षक मध्यम आय वर्ग में आते हैं और किराये के मकान में रहते हैं। उच्च आय वाले शिक्षकों में कार्य-संतोष अधिक पाया गया जबकि निम्न आय वर्ग के शिक्षकों में मनोवैज्ञानिक तनाव अपेक्षाकृत अधिक रहा।**

**यह इंगित करता है:-**

**✳ सामाजिक स्थिति का विश्लेषण**

भागलपुर जिले में शिक्षकों को समाज में परंपरागत रूप से सम्मान प्राप्त है, किंतु आर्थिक असमानता और राजनीतिक हस्तक्षेप से उनके सामाजिक दर्जे में कुछ गिरावट देखी गई है।
कई शिक्षकों ने साक्षात्कार में यह बताया कि समाज में "सरकारी शिक्षक" की पहचान अब पहले जैसी गौरवपूर्ण नहीं रही।

✳ आर्थिक स्थिति का विश्लेषण

वेतनमान में सुधार के बावजूद महंगाई दर और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ उनकी वास्तविक आर्थिक स्थिति को कमजोर करती हैं।
कई शिक्षकों को बच्चों की उच्च शिक्षा और पारिवारिक दायित्वों के कारण ऋण लेना पड़ता है।

✳ मनोवैज्ञानिक स्थिति का विश्लेषण

साक्षात्कारों से ज्ञात हुआ कि लगभग 60% शिक्षकों ने "मध्यम से उच्च" स्तर का तनाव अनुभव किया।

तनाव के प्रमुख कारणों में प्रशासनिक दबाव, संसाधनों की कमी, और छात्रों की उपस्थिति में गिरावट प्रमुख हैं।

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि बिहार के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ एक-दूसरे से निकट रूप से जुड़ी हुई हैं।

**सामाजिक स्थिति:**
शिक्षक आज भी नैतिक और बौद्धिक दृष्टि से समाज में सम्मानित हैं, किंतु उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा का स्वरूप समय के साथ परिवर्तित हुआ है। शहरी क्षेत्रों में निजी विद्यालयों के प्रसार ने सरकारी शिक्षकों की सामाजिक छवि पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

**आर्थिक स्थिति:**
वेतनमान में सुधार के बावजूद शिक्षकों की वास्तविक क्रयशक्ति सीमित बनी हुई है। पारिवारिक आवश्यकताओं, बच्चों की शिक्षा तथा सामाजिक दायित्वों के निर्वहन से आर्थिक दबाव बना रहता है, जिससे वे अपेक्षाकृत वित्तीय रूप से सशक्त नहीं हो पा रहे।

**मनोवैज्ञानिक स्थिति:**
लगभग दो-तिहाई शिक्षकों ने मानसिक दबाव या तनाव की स्थिति स्वीकार की। इस तनाव के पीछे प्रमुख कारण हैं—कार्यभार में वृद्धि, विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, प्रशासनिक नियंत्रण का दबाव तथा भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना।

**लिंग के आधार पर अंतर:**

**महिला शिक्षकों में मानसिक तनाव का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया, जबकि पुरुष शिक्षकों में आर्थिक असंतोष की प्रवृत्ति अधिक दिखाई दी।**

**संबंध का विश्लेषण:**

**सहसंबंध विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और मानसिक संतोष के बीच $r = 0.67$ का सकारात्मक संबंध मौजूद है, जो इंगित करता है कि आर्थिक स्थिरता उनके मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।**

## ✳ निष्कर्ष (Conclusion)

**भागलपुर जिले में कार्यरत सरकारी विद्यालयों के शिक्षक अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।**

**उनका जीवन संतुलन अनेक कारकों पर निर्भर करता है - जैसे आय का स्तर, कार्यस्थल का वातावरण, प्रशासनिक समर्थन और सामाजिक अपेक्षाएँ।**

**शिक्षकों की सामाजिक प्रतिष्ठा धीरे-धीरे घट रही है, क्योंकि समाज उन्हें केवल "सरकारी नौकरीधारी" के रूप में देखने लगा है।**

**आर्थिक रूप से अधिकांश शिक्षक सीमित संसाधनों में जीवन यापन कर रहे हैं।**

**मानसिक तनाव एक व्यापक समस्या है, जिसका असर न केवल उनके स्वास्थ्य पर बल्कि शिक्षण-गुणवत्ता पर भी पड़ रहा है।**

**प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास के अवसर सीमित होने से उनका आत्म-संतोष घट रहा है।**

**इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों की सामाजिक-आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्थिति में सुधार किए बिना बिहार की शिक्षा व्यवस्था में वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं।**

## ✳ सुझाव (Suggestions)

**वेतन एवं भत्ता संरचना का पुनरीक्षण:**

**शिक्षकों के वेतनमान एवं भत्तों का निर्धारण महंगाई दर और जीवन-यापन लागत के अनुरूप समय-समय पर किया जाना चाहिए, ताकि उनका वित्तीय संतुलन एवं कार्यसंतोष सुनिश्चित हो सके।**

**मनोवैज्ञानिक परामर्श की व्यवस्था:**

**विद्यालय स्तर पर "शिक्षक सहायता केंद्र" या "परामर्श प्रकोष्ठ" स्थापित किए जाएँ, जहाँ शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य, तनाव-प्रबंधन तथा भावनात्मक संतुलन से संबंधित मार्गदर्शन उपलब्ध हो।**

**सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मान्यता का संवर्धन:**

शिक्षक दिवस, नवोपक्रम प्रतियोगिताएँ तथा सम्मान समारोह जैसी पहलें संस्थागत रूप से प्रोत्साहित की जाएँ, जिससे शिक्षकों का आत्मबल, सामाजिक पहचान और व्यावसायिक प्रतिष्ठा सुदृढ़ हो।

**प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक दक्षता विकास:**

सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development) कार्यक्रमों को अनिवार्य, व्यावहारिक तथा परिणामोन्मुख बनाया जाए, ताकि शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं नवाचार क्षमता में वृद्धि हो सके।

**कार्यस्थल की स्थितियों में सुधार:**

विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षण-संसाधन, प्रशासनिक सहयोग तथा प्रेरक कार्य वातावरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता में वृद्धि और शिक्षक के मनोबल का सशक्तिकरण हो सके।

**महिला शिक्षकों हेतु सहायक प्रावधान:**

महिला शिक्षकों के लिए लचीली कार्य-समय व्यवस्था, सुरक्षा-संवेदनशील आधारभूत ढाँचा तथा मातृत्व-संबंधी सुविधाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि वे कार्य और दायित्वों में संतुलन बनाए रख सकें।

**शिक्षक-छात्र अनुपात का संतुलन:**

शिक्षण प्रभावशीलता बढ़ाने और कार्यभार में संतुलन लाने के लिए रिक्त शिक्षक पदों की शीघ्र नियुक्ति की जानी चाहिए, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

## ✳ भविष्य की दिशा (Scope for Further Research)

भविष्य में यह अध्ययन निम्न दिशाओं में विस्तारित किया जा सकता है -

बिहार के विभिन्न जिलों की तुलना के माध्यम से एक व्यापक राज्यस्तरीय अध्ययन किया जा सकता है।

शिक्षकों के डिजिटल रूपांतरण और ऑनलाइन शिक्षण से उत्पन्न तनाव पर केंद्रित गहन शोध की आवश्यकता बनी हुई है।

साथ ही, शिक्षक के कार्य-संतोष और छात्र उपलब्धियों के मध्य संबंध को सांख्यिकीय दृष्टि से विश्लेषित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, नीति-निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षकों की भागीदारी पर भी एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

## ✳ संदर्भ सूची (References - APA Format)

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

2. NCF (2005). National Curriculum Framework, NCERT, New Delhi.

3. RTE Act (2009). Right to Education Act, Government of India.

4. श्रीवास्तव, आर. (2016). "ग्रामीण बिहार में शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का अध्ययन." भारतीय शिक्षा समीक्षा, 22(3), 115-127.

5. कौशिक, एस. एवं सिंह, जे. (2018). "शिक्षकों का कार्य-संतोष और आर्थिक दशा." शैक्षणिक दृष्टि, 10(2), 45-53.

6. N.C.E.R.T. (2021). Annual Status of Teachers Report.

7. नीति आयोग (2019). State Education Index Report. भारत सरकार.

8. विश्व बैंक (2020). Education and Human Capital in Bihar.